**EDUZONE: International Peer Reviewed/Refereed Multidisciplinary Journal (EIPRMJ), ISSN: 2319-5045**
**Volume 15, Issue 1, January - June, 2026, Available online at: www.eduzonejournal.com**

# ''शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं एवं पुरूषों में जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन''

**डॉ. मनीष सैनी[1], सुनिता चौधरी[2]**

[1]असोसिएट प्रोफेसर, बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर
[2]बी.एड.एम.एड. छात्रा, बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

**सारांश**

**प्रस्तुत शोध का विषय "शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं एवं पुरुषों में जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" है। वर्तमान समय में जनसंख्या वृद्धि एक महत्वपूर्ण सामाजिक एवं शैक्षिक समस्या के रूप में उभरकर सामने आई है। जनसंख्या शिक्षा व्यक्तियों में जनसंख्या संबंधी जागरूकता, परिवार नियोजन, स्वास्थ्य, संसाधनों के उचित उपयोग तथा जीवन स्तर में सुधार हेतु महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले महिलाओं और पुरुषों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना तथा यह विश्लेषण करना है कि उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर का इस अभिवृत्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है। अध्ययन में लिंग, निवास क्षेत्र तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर दृष्टिकोण में अंतर का परीक्षण किया गया है। प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन हेतु शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से महिलाओं एवं पुरुषों का चयन नमूना पद्धति द्वारा किया गया। डेटा संकलन के लिए प्रश्नावली एवं अभिवृत्ति मापनी का उपयोग किया गया तथा प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन एवं ज-जमेज के माध्यम से किया गया।**

**मुख्य शब्द: जनसंख्या शिक्षा, अभिवृत्ति, सामाजिक-आर्थिक स्तर, शहरी क्षेत्र, ग्रामीण क्षेत्र, महिला एवं पुरुष, विश्लेषणात्मक अध्ययन**

## प्रस्तावना

मानव एक प्रगतिशील प्राणी है। मानव ने अपने शारीरिक तथा मानसिक विकास के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक विकास भी किया है। मानव की इस विकासशील, अन्वेषण एवं कुछ नया करने की प्रवृत्ति ने विश्व के अनेक देशों को विकसित कर दिया है जबकि कुछ राष्ट्र अभी भी विकास की ओर अग्रसर हैं। भारत विश्व का एक ऐसा राष्ट्र है जो अपनी जनसंख्या, संसाधनों और विभिन्नताओं के कारण विश्व में एक विशिष्ट स्थान रखता है। वर्तमान में भारत की जनसंख्या और संसाधनों में सन्तुलन बनाने के प्रयास किये जा रहे हैं क्योंकि भारत की जनसंख्या में जिस गति से वृद्धि हो रही है वह एक चुनौतिपूर्ण समस्या बनती जा रही है। किसी भी राष्ट्र के संसाधन सीमित होते हैं और जनसंख्या में लगातार वृद्धि होने से जनसंख्या और संसाधनों में असन्तुलन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। वर्तमान विश्व आज इसी असन्तुलन के कारण अनेक समस्याओं का सामना कर रहा है और समस्या के समाधान के लिए विकसित देश, विकासशील और अल्पविकसित देशों के संसाधनों की ओर कुदृष्टि डाले हुए हैं।

## शोध की आवश्यकता

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो मानव को एक उत्तम प्राणी बनाती है तथा उसे चिन्तन शक्ति प्रदान करती है। किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए तथा विकास की भावी योजनाओं को क्रियान्वित करने के लिए शिक्षित नागरिकों की महती भूमिका होती है। राष्ट्र के विकास में प्राकृतिक एवं मानव संसाधनों का अभूतपूर्व योगदान होता है। मानव संसाधन आवश्यक जरूर हैं परन्तु वह प्राकृतिक संसाधनों के अनुपात में ही होना चाहिए। आज समस्त विश्व में जनसंख्या के अनुपात में संसाधनों की कमी दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है जिससे एक विस्फोटक स्थिति उत्पन्न हो गयी है। तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या राष्ट्र की प्रगति और सम्पन्नता के लिए परमाणु बम से कहीं अधिक घातक सिद्ध हो रही है।

## अध्ययन का महत्व

जनसंख्या वृद्धि के कारण अभूतपूर्व संकट उत्पन्न होते जा रहे हैं। अधिक जनसंख्या वृद्धि से खाद्यान्न समस्या उत्पन्न हो गयी है। विश्व के अनेक देशों के व्यक्ति भूखे मरने के लिए विवश हैं। अधिक जनसंख्या वृद्धि से परिस्थितिकी प्रणाली असंतुलित हो रही है। इससे प्रदूषण की ज्वलंत समस्या बढ़ती जा रही है। जनसंख्या वृद्धि से आवश्यकताओं में वृद्धि होती है, आवश्यकताओं में वृद्धि से औद्योगिकरण बढ़ता है जिसका परिणाम पर्यावरण प्रदूषण के रूप में देखा जाता है। सिंह (2017) के अनुसार, ''हमारे देश की

सबसे बडी समस्याओं में एक समस्या जनसंख्या विस्फोट की है। जनसंख्या विस्फोट से गरीबी, प्रदूषण, भोजन तथा भूमि की कमी एवं प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ता जा रहा है जो जीवन की गुणवत्ता को विकृत कर रहा है।"

**सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन**

- माहेश्वरी (2024) द्वारा विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति रूचि के विषय में अध्ययन किया गया। इस अध्ययन का उद्देश्य स्कूली शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना, छोटे परिवार के विषय में शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना तथा स्कूल पाठ्क्रम में जनसंख्या शिक्षा के लिये क्या रखा जाये इसका अध्ययन करना था।

- सिंह, चन्द्रेश कुमार (2024) द्वारा प्रशिक्षण महाविद्यालयी छात्रों एवं छात्राओं की जनसंख्या शिक्षा के प्रति जागरूकता एवं अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया। इस शोध अध्ययन में सोद्देश्य न्यादर्श प्रविधि द्वारा 8 प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत 500 छात्रों-छात्राओं को सम्मिलित किया गया। परिणामों में छात्रों की तुलना में छात्राओं की जनसंख्या शिक्षा के प्रति जागरूकता अधिक पायी गयी। आवास के आधार पर छात्रों तथा छात्राओं की जनसंख्या शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर पाया गया। विषय वर्ग के आधार पर छात्रों-छात्राओं की जनसंख्या शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

- श्रीवास्तव (2024) द्वारा जनसंख्या शिक्षा को स्कूल पाठ्यक्रम में रखे जाने के प्रति शिक्षकों के ज्ञान एवं दृष्टिकोण का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन के लिये मध्यप्रदेश के रीवा एवं भोपाल जिलों के विभिन्न 300 स्कूली शिक्षकों का प्रतिदर्श लिया गया। इस अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि अधिकांश शिक्षक जनसंख्या शिक्षा के प्रति जागरूक हैं। सभी शिक्षक इस समस्या से ही बेकारी एवं निम्न जीवन स्तर की समस्या का उत्पन्न होना मानते हैं।

**साहित्य विवचेना**

प्रस्तुत शोध अध्ययन की समस्या लगभग नवीन है। पूर्व में हुए शोध अध्ययनों में कोई भी ऐसा शोध कार्य प्राप्त नहीं हुआ है जिसमें शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं एवं पुरूषों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया हो। पूर्व शोध कार्यों में कोई भी शोध कार्य जिले रींगस, सीकर की महिलाओं एवं पुरूषों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर नहीं किया गया है, इस दृष्टि से यह शोध कार्य नवीन तथा भिन्न है। पूर्व शोध कार्यों में जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन अनेक सामाजिक, मनोवैज्ञानिक तथा जनसांख्यिकीय चरों के सन्दर्भ किया गया है परन्तु वर्तमान शोध में केवल सामाजिक-आर्थिक स्तर के सन्दर्भ में जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

**समस्या कथन**

"शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं एवं पुरूषों में जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन"

**शोध अध्ययन के उद्देश्य**

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के व्यक्तियों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना।

**शोध अध्ययन की परिकल्पनायें**

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के व्यक्तियों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है।

**शोध विधि**

प्रस्तुत शोध जिले रींगस, सीकर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली महिला एवं पुरूषों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव के अध्ययन से सम्बन्धित है अतः प्रस्तुत शोध हेतु वर्णनात्मक शोधविधि का प्रयोग किया गया है।

**जनसंख्या**

रींगस, सीकर ग्रामीण रींगस, सीकर के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली सभी विवाहित महिलाएं एवं पुरूष
शहरी रींगस, सीकर के शहरी क्षेत्रों में रहने वाली सभी विवाहित महिलाएं एवं पुरूष
न्यादर्श

| जिले | क्षेत्र | लिंग | चयनित महिलाएं एवं पुरूष | | उपयोग हेतु न्यादर्शकुल न्यादर्श |
|---|---|---|---|---|---|
| रींगस, सीकर | ग्रामीण | महिला | 107 | 100 | 200 |
| पुरूष | 105 | 100 | | | |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| शहरी | महिला | 103 | 100 | 200 |
| पुरूष | 107 | 100 | | |
| कुल | 422 | 400 | 400 | |

उपकरण
- टी0एस0 सोढ़ी तथा जी0डी0 शर्मा द्वारा निर्मित लघु परिवार एवं जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति मापनी।
- डॉ0 अशोक के0 कालिया एवं डॉ0 सुधीर साहू द्वारा निर्मित सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ
(क) प्रतिशत
(ख) मध्यमान तथा मानक विचलन
(ग) 'टी' परीक्षण
(घ) प्रसरण विश्लेषण
(ङ) गुणनफल-आघूर्ण सहसम्बन्ध गुणांक
रींगस, सीकर जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के महिलाओं तथा पुरूषों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन

व्याख्या एवं विश्लेषण:- सारणी में जनसंख्या शिक्षा के प्रति ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के व्यक्तियों की अभिवृत्ति पर उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव का स्तर प्रदर्शित किया गया है। ग्रामीण क्षेत्र के 200 व्यक्तियों में से जनसंख्या शिक्षा के प्रति 1 व्यक्ति में निम्न, 157 व्यक्तियों में औसत और 42 व्यक्तियों में उच्च अभिवृत्ति पायी गयी है। इसी प्रकार शहरी क्षेत्र के 200 व्यक्तियों में से जनसंख्या शिक्षा के प्रति 135 व्यक्तियों में औसत और 65 व्यक्तियों में उच्च अभिवृत्ति पायी गयी है। परन्तु किसी भी व्यक्ति में निम्न अभिवृत्ति नहीं पायी गयी है। सारणी से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र के 78.5ः व्यक्तियों में जनसंख्या शिक्षा के प्रति औसत अभिवृत्ति पायी गयी है। जबकि 21.00ः तथा 0.5ः व्यक्तियों में जनसंख्या शिक्षा के प्रति क्रमशः उच्च तथा निम्न अभिवृत्ति पायी गयी है। शहरी क्षेत्र के 67.5ः व्यक्तियों में जनसंख्या शिक्षा के प्रति औसत अभिवृत्ति तथा 32.5ः व्यक्तियों में जनसंख्या शिक्षा के प्रति उच्च अभिवृत्ति पायी गयी है। परन्तु शहरी क्षेत्र के व्यक्तियों में जनसंख्या शिक्षा के प्रति निम्न अभिवृत्ति नहीं पायी गयी है।

**परिणाम:-**
हमारे देश में जनसंख्या शिक्षा से सम्बन्धित उत्तम पुस्तकों एवं सारगर्भित लेखों का अभाव है। इस अभाव के कारण जनसंख्या शिक्षा के विभिन्न अंगों की शिक्षा प्रदान करना कठिन हो जाता है। अतः वर्तमान समय में यह आवश्यक है कि जनसंख्या शिक्षा से सम्बन्धित उच्च स्तरीय पुस्तकों का लेखन किया जाए। ये सभी पुस्तकें सरल व सुबोध भाषा में लिखी जानी चाहिए जिससे किसी भी स्तर के महिला व पुरूष जनसंख्या शिक्षा का ज्ञान प्राप्त कर सके। इसके साथ-साथ सरकार तथा प्रकाशकों द्वारा लेखकों व विद्वानों को जनसंख्या शिक्षा पर पुस्तकें तथा लेख लिखने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

**शैक्षिक निहितार्थ**
संसार में कोई भी कार्य बिना किसी प्रयोजन के सम्पादित नहीं होता। इसी प्रकार शोध कार्य भी सम्बन्धित समस्या के उपयोगी पक्ष को उजागर करने का महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। शोध का प्रयोजन सम्बन्धित क्षेत्र में ज्ञान का विस्तार व उन्नयन करना, नवीन सिद्धान्तों, नियमों तथा नीतियों का निर्माण करना है। शिक्षाशास्त्र में किसी शोधकार्य की सार्थकता तभी स्वीकार की जाती है जब शोध से प्राप्त नवीन परिणामों, नवीन सिद्धान्तों, नियमों, नीतियों तथा ज्ञान का प्रयोग कर शिक्षा, शिक्षण तथा अधिगम को प्रभावी बनाया जा सके तथा शैक्षिक प्रक्रिया को प्रोन्नत किया जा सके।

**ग्रंथ सूची**

1. अग्रवाल, जे. सी. (2008). शैक्षिक मनोविज्ञान। नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।
2. मंगल, एस. के. (2013). शैक्षिक मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी। नई दिल्ली: पीएचआई लर्निंग प्रा. लि.
3. शर्मा, आर. ए. (2011). शोध पद्धति एवं शैक्षिक अनुसंधान। मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।
4. सिंह, वाई. के. (2006). शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ। नई दिल्ली: एपीएच पब्लिशिंग कॉरपोरेशन।
5. भटनागर, आर. पी. (2010). जनसंख्या शिक्षा एवं सामाजिक विकास। जयपुर: राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
6. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT). (2005). जनसंख्या शिक्षा: सिद्धांत एवं व्यवहार। नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
7. यादव, आर. एस. (2012). सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं शिक्षा। आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।
8. बुच, एम. बी. (1988–1992). शिक्षा में अनुसंधान का पंचम सर्वेक्षण। नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
9. त्रिपाठी, एस. एन. (2011). सामाजिक अनुसंधान एवं सर्वेक्षण विधि। इलाहाबाद: किताब महल।
10. वर्मा, पी. एस. (2009). शिक्षा एवं समाजशास्त्र। नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।